

- E.d* : मोहाविष्टः (ष्टा, ष्टं), मोहाधिष्ठितः (ता, तं).
- II. To enrapture : प्रहर्षयति (c. of हृष्).
- ENTRAP : (1) बध्नाति (बन्ध्, c. 9.) (when the meaning is clear). *by means of nets, hooks, and other devices for e. ping fish*: जालवडिशप्रभृतिभिर्मत्स्य-बन्धनोपायैः, Sa v.; (2) पाशे पातयति (c. of पत्) : v. To ensnare.
- ENTREAT : उपच्छन्दयति (छन्द्, c. 10.), R. v. 58 : v. To beg, implore.
- ENTREATY : (1) अम्यर्थना or प्रार्थना, *by e.s, by advice* : अम्यर्थनाभिश्चोपदेशैश्च, K. (2) याचना : v. Request.
- ENTREPOT : वाणिज्यस्थानम् (?).
- ENTRUST (v.t.) : निक्षिपति (क्षिप्, c. 6.), *should e. all work to him* : तस्मिन् सर्वकार्याणि निक्षिपेत्, M. vii. 59; *is the secret you were entrusted with kept*: रक्ष्यते भवता रहस्यनिक्षेपः, V. ii.; (2) न्यस्यति, वि-, (अस्, c. 4.) or न्यासीकरोति (with sim. cons.), *e. ing wife to sons*: सुतविन्यस्तपत्नीकः, Y.; (3) नि-दधाति or धत्ते (धा, c. 3.) (with sim. cons.), K.b.; (4) निवेशयति (c. of विश्) (rare), *all work was e. ed to you* : त्वयि निवेशितसर्वकार्यः, Mu. v.
- ENTRY : I. The act of entering : प्रवेशः, -नम्, *on (your) e.* : प्रवेशे, R. vi. 24 : *getting an e. with difficulty* : कथमपि लब्धप्रवेशः, Va. II. A passage for entering : प्रवेशः : v. Entrance (III), passage. III. That which is entered : expr. by verb : *this is an erroneous e.* : *इदमभ्रमाश्रितवेष्टितम् ; *to make an e. of* : v. Enter (II).
- ENTWINE (v.) : परि-वेष्टयति (वेष्ट्, c. 10.) (=to encircle, surround : q.v.).
- ENUMERATE : I. To count : संख्याति (ख्या, c. 2.). II. To recount, mention : q.v. आख्याति (ख्या, c. 2.), *e. the kings of England* : *इंग्लण्डे-श्वराणां नामानि कथय.
- ENUMERATION : आख्यानम्. v. Mention, recital.
- ENUNCIATE : I. To predicate : लक्षणं or रूपं कथयति (कथ्, c. 10.). II. To pronounce : q.v. : उच्चारयति (c. of चर्).
- ENUNCIATION : I. Predication : लक्षण- or रूप-कथनम्. II. Mode of utterance : उच्चारणम्. III. A declaration : उक्तिः.
- ENVELOP (v.) : (1) गुण्ठयति, अव-, (गुण्ठ्, c. 10.) (=to veil), *e. ed in nocturnal darkness* : रजनी-तिमिरावगुण्ठितः (ता, तं), Ku.; (2) परि-वृणोति or वारयति (वृ, c. 5. and 10.) (=to enclose), *e. ing the whole Lankā* : लङ्कां समस्तां परिवार्य, Ram. : v. Also to encircle, conceal.
- ENVELOP (subs.) : *पत्रवेष्टनम्.
- ENVENOM (v.) : I. Lit. : विषेण लिम्पति (लिप्, c. 6.) or देग्धि (दिह्, c. 2.) or अनक्ति (अञ्ज्, c. 2.). II. Fig. : *e. ed glance* : विषेण दिग्धः कटाक्षः, Ma.; "*e. ed tongue of calumny*" : विषाक्ता पिशुनजिह्वा.
- ENVIALE : स्पृहणीयः (या, यं), *of e. prowess* : स्पृहणीयवीर्यः, Ku. iii. 20.
- ENVIER : (1) ईर्ष्यिन् (म.); (2) असूयकः : (3) मत्सरिन् (म.).
- ENVIOUS : (1) ईर्ष्यिन् (f. जी), *e., hateful, discontented* : ईर्ष्यो दृण्यसन्तुष्टः, H.; (2) मत्सरिन् (f. जी), *e. of others' rise* : परवृद्धिमत्सरिन् (f. जी), Si.; साम्यसूयः (या, यं); (4) ईर्ष्यालु (mf. n.); (5) असूयापरीतः (ता, तं); etc.
- ENVIOUSLY : (1) सेर्ष्यम्; (2) साम्यसूयम्; (3) समत्सरम्.
- ENVIOUSNESS : v. Envy.
- ENVIRON (v.) : परिवृणोति (वृ, c. 5.) : v. Encompass.
- ENVIRONS : परिसराः or परिसरविषयाः (m. pl.) : v. Suburbs.
- ENVOY : दूतः : v. Ambassador.
- ENVY (subs.) : (1) ईर्ष्या : v. Jealousy; (2) अभि-असूया, *who has created yours e.* : केनाम्यसूया ते जनिता, Ku.; (3) मात्सर्यम्, *whose minds are vitiated with the feeling of e.* : मात्सर्यरागोपहतात्मन् (mf. n.), Ki.
- ENVY (v.) : I. In bad sense : (1) असूयति, अभि-, (nomi.) (with dat.); (2) ईर्ष्यति, (ईर्ष्य्, c. 1.) (rare : with dat.); (3) better by subs. II. In good sense; स्पृहयति, -ते (स्पृह्, c. 10.) (with dat.), *I e. the king Daśaratha* : स्पृहयामि राज्ञे दशरथाय, Vi.
- EPACT : *annual e.* : सूर्यचन्द्रवत्सरान्तरम्; *monthly e.* : अर्कचन्द्रमासान्तरम्.
- EPAULET : स्कन्धाभरणम्, and sim. comp.s. (?).